Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

सप्तकों की कवयित्रियाँ और नारीवाद

डॉ. सोनल नंदनूरवाले
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग प्रमुख, सरस्वती भुवन विज्ञान महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर
Email: drsonalnandanurwale@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180232
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 164-167
February - 2026
Submitted: 18 Jan. 2026
Revised: 28 Jan. 2026
Accepted: 13 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

सारांश

हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के साथ ही आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का प्रारंभ हुआ। विज्ञान और तकनीकी विकास ने आम आदमी के जीवन को प्रभावित किया। शिक्षा का प्रचार हुआ। सामान्य जन और विशेषतः महिलाएँ इससे लाभान्वित हुई। भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ जन मानस की सोच की दिशाएँ बदलीं। जीवन जीने के तरीकों में बदलाव आया। चूँकि साहित्य जीवन का प्रतिबिंब है।। साहित्य की विभिन्न विधाओं में पुरुष साहित्यकारों के साथ-साथ महिला साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

सन् 1942 में फ्रेंच समीक्षक सीमोन द वोउवा की 'द सेकेंड सेक्स' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। जिसमें सीमोन नारी के "अन्य" एवं "अधिनस्तता" की स्थिति को चुनौती देती हैं। वह कहती हैं " स्त्री को अमीर हो या गरीब श्वेत हो या काली अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी" इस क्रांतिकारी विचारों से दुनियाँ के सभी देशों की नारियाँ प्रभावित हुई। साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से वह अपने मुक्तिद्वार खोलने लगीं। इस पुस्तक द्वारा पहली बार आधुनिक नारीवाद के बुनियादी प्रश्न स्पष्ट एवं सही रूप में प्रस्तुत होने लगे। लेखिका सूर्यबाला का कथन है "पिछले पाँच दशकों में निरूपित नारी का सूक्ष्मता से आकलन करें तो पहले साहित्य की नारी आगे बढ़ी, ज्यादा बोल्ड हुई पीछे समाज की। कुछ कृतियों को मद्देनजर रखते हुए ऐसी भी स्थिति लगी कि साहित्य समाज का नहीं, वरन समाज साहित्य का दर्पण बन सामने आया।"

साहित्य सामाजिक आर्थिक राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ बदलता रहा। स्त्री में भी बदलाव आया। स्त्री साहित्य के माध्यम से अपने खोये हुए अस्तित्व के भिन्न-भिन्न आयामों को तराशने लगी। जिनका सच्चा प्रतिबिंब उनकी रचनाओं में दिखाई देता है। स्त्री परिवर्तन की यह प्रक्रिया पिछले पाँच दशकों से चली आ रही है। हम यहाँ केवल अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित सप्तकों की महिला कवयित्रियों की ओर एक दृष्टिक्षेप करना चाहेंगे।

"अज्ञेयजी" ने अब तक चार सप्तकों का संपादन किया। जिसमें कुल 28 कवि हैं। इन 28 कवियों में तीन महिला कवयित्रियाँ हैं। अतः कम से कम 11% प्रतिशत स्थान अज्ञेय ने महिला कवयित्रियों को दिया है। जिनमें 1951 प्रकाशित दूसरा सप्तक की 'शकुन्तला माथुर 1959 में प्रकाशित तीसरा सप्तक की 'कीर्ति चौधरी' और सन् 1979 में प्रकाशित चौथा सप्तक की 'सुमन राजे'। चौथा सप्तक के आते-आते हिंदी साहित्य में अनेक कवयित्रियाँ कविताएँ लिख रही थीं। फिर भी सप्तकों के माध्यम से अज्ञेयजी ने तीन महिला कवयित्रियों को कम से कम प्रकाश में तो लाए हैं। यह महिला साहित्यकार की दृष्टि से महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

यह कवयित्रियाँ चारदीवारी की बंद स्त्रियाँ नहीं हैं कोई चौखट में खड़ी हैं तो कोई चौखट से बाहर निकलकर अपनी भीतरी घुटन, व्यथा, अन्याय तथा अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए नयी जमीन तलाशती टूटती बिखरती बनती सँवरती स्त्री की अभिव्याप्ति हैं। इसलिए यह कहना समयोचित होगा कि सप्तकों की कवयित्रियों में नारीवादी साहित्य के बीज प्रस्फुटित होते दिखाई देते हैं।

मूल शब्द : *नारीवाद, सप्तक, अज्ञेय, महिला कवयित्री, स्त्री-अस्मिता, स्त्री-सशक्तिकरण, पुरुष प्रधान संस्कृति, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य, शकुन्तला माथुर, कीर्ति चौधरी, सुमन राजे*

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. सोनल नंदनूरवाले, सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग प्रमुख, सरस्वती भुवन विज्ञान महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर

How to cite this article:
नंदनूरवाले, . सोनल . (2026). सप्तकों की कवयित्रियाँ और नारीवाद. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 164–167. https://doi.org/10.5281/zenodo.18934421

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18934421
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

परम्परागत मूल्यों से संघर्ष

अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए इन कवयित्रियों ने परंपरागत मूल्यों से संघर्ष किया है। शकुन्तला माथुर का वक्तव्य देखिए श्नारी का सुख केवल उसकी घर गृहस्थी तक ही सीमित हैए यह मैं नहीं मानती। गृहस्थी के साज-श्रृंगार के बाद भीय वह पूरा संतोष नहीं पातीए उसे लगता है जैसे वह अपूर्ण है। घर में रहकर वह अपनी प्रत्येक इच्छा की पूर्ति करती हैए किन्तु फिर भी मानसिक क्षेत्र में पैर फैलाने का अवसर उसे घर की चार दिवारी में प्राप्त नहीं होता। इस अभाव की पूर्ति मुझे काव्य में मिली। श यहाँ स्त्री के लिए महत्वपूर्ण है उसकी अपनी प्रतिष्ठा एवं स्वतंत्रता वह अपनी अस्मिता को किसी भी कीमत पर आहत होने देना नहीं चाहती।

शकुन्तला माथुर कहती हैं.

यह नयी लता
खुलती कोंपल
यह बन्द फलों की कलियाँ सब
खुलने कोए खिलने कोए झुकने को होती
स्वयं धरा पर /

कीर्ति चौधरी कहती हैं-

मैं प्रस्तुत हूँ
इन कई दिनों के चिन्तन और संघर्ष के बाद
यह क्षण जो अब आ पाया हैए
उसमें बँधकर मैं प्रस्तुत हूँ।

सुमन राजे कहती हैं-

मुझे नहीं चाहिए
निर्जीव चिड़ियों की पथराई आँख
मुझे चाहिए उसके काँपते
उड़ान के लिए तैयार पंख /

प्रतिभाशाली कवयित्रियों में स्वाधीनता की अभिव्यक्ति का संकेत अधिक है। वह परम्परागत कीचड़ से बाहर निकलने के लिए छटपटा रही हैं।

पुरुष प्रधान संस्कृति का विरोध :

इन कवयित्रियों ने पुरुष प्रधान संस्कृति को ललकारा है। प्रसिद्ध हिंदी कवि गिरिजा कुमार माथुर जी को अपनी पत्नी कहीं प्रसिद्ध कवयित्री न बन जाय क्या से ईर्ष्या थी ध क्योंकि शकुन्तला माथुर अपने वक्तव्य में कहती हैं श्मैंने जब भी कुछ लिखा मेरे पति ने भी उसे सदा हँसी में टाल दिया। इसके अतिरिक्त जब भी मैं कविता लिखतीए इनकी कोई न कोई रचना सामने आकर खड़ी हो जाती और मेरी कविता शर्मिन्दा हो जाती। अभी कुछ समय पूर्व इनके कुछ प्रतिष्ठित साहित्यिक मित्रों ने मेरी रचनाएँ देखीं और उन्हें प्रकाश में लाने को बाध्य किया। इस कारण इन रचनाओं को कविता कहने का श्रेय हम दोनों का नहींए मित्रों का है।श

यहाँ पति भी पुरुष है और मित्र भी पुरुष है। पर दोनों के रिश्ते में अन्तर है। पति अपनी पत्नी को अपनी ऊँचाई से अधिक ऊपर उठने नहीं देता। अतः वह स्त्री को अधीनस्थ रखना चाहता है। इस परम्परागत धारणा को आधुनिक स्त्री तोड़ रही है। समाज द्वारा बनाये गये सड़े गले मुर्दा विचारों को दफनाकर पुरुष प्रधान संस्कृति की घुटन को वह अभिव्यक्ति देती है-

शकुन्तला माथुर का कहना है .

कोचवान की काली-सी चाबुक के बल पर
वो बढ़ता था
घूम-घूम जो बलखाती थी सर्प सरीखी
वेदर्दी से पड़ती थी दुबले घोड़े की गर्म
पीठ पर।
भाग रहा वह तार कोल की जली
अँगीठी के ऊपर से /

कीर्ति चौधरी ने घर के झगड़ों से ही दर्दभरी अभिव्यक्ति दी है।

वह गीत कि जिसका दर्द देखकर
आँखें सब भर आयी थीं.
मुझमें उसकी अनुभूति महज
घर के झगड़ों से उपजी थी /
वह अडिग अविचलित पन्थ ज्ञान
जिसके उपर
भावुक हृदयों की श्रद्धा उमड़ी मँडरायी
बस विवशए पराजित तकिये में मुँहगाड़

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

खीज कर लिया गया
वे स्थितियाँ जो रोज तुम्हारेए इसकेए उसके जीवन में
आती रहती हैंय
मेरी भी हैं।
सुमन राजे इस बिखराव की स्थिति में भी क्रांतिकारी विचार व्यक्त करती हैं।
मन अपनी सीमाएँ पहचानो
सँभलो मुझे सँभालो
बेमानी मौसम को जानो
अपनी दुर्बलता पहचानो
फिसलन की इस घाटी में मन नापो पग चापों
रेशम की सुरमाई परिधि को कस कर बाँधो

इन प्रतिभाशाली कवयित्रियों में स्वाधीनता की अभिव्यक्ति का संकेत अधिक है। वह परंपरागत गर्त से बाहर निकलने के लिए आश्वस्त हैं।

मानसिक आवश्यकता की तलाश :

स्त्री का पुरुष के साथ रहना जहाँ उसकी जैविक आवश्यकता हैए वहाँ अपनी- अस्मिता बनाये रखना भी उसकी मानसिक आवश्यकता है। पारिवारिक जिन्दगी से बाहर निकलकर वह खुली हवा में साँस लेना चाहती है। क्योंकि आज की नारी चार दीवारी के भीतर की ए० सी० की ठंडक से भी अधिक गर्मी मानसिक स्तर पर सह रही है। इस संबंध में इन कवयित्रियों की अभिव्यक्ति निम्न है।
शकुन्तला माथुर कहती हैं -
खुलने परए खिलने परए पकने पर
झुक जायेंगी स्वयं धरा पर
फिर से उगने को कल
नये रूप में।

भीग जायें
निर्बल होते मन पर सहसा याद घिरी
केवल तुम्हीं इस गृह में नहीं
आज के दिन

प्रणय जीवन की आवश्यकता है। यह तथ्य भी यहाँ उजागर होता दिखाई देता है। जिसे अभिव्यक्ति देने में सप्तक की कवयित्रियाँ संकोच महसूस नहीं करतीं। अतः वे परिवेश के प्रति सतर्क हैं।

निष्कर्ष

1ण इन महिला कवयित्रियों ने स्वातंत्र्योत्तर काल की नारी की सामाजिक मानसिक स्थिति को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। जीवन के बदलते संदर्भए टूटते हुए परिवेशए मानवी मूल्यों का बिखरावए परम्परागत मूल्यों से संघर्षए स्त्री मानसिकता को लेकर स्त्री के बहुआयामी व्यक्तित्व की सही पहचान अपनी कृतियों में इन महिला कवयित्रियों ने तटस्थता से स्पष्ट की है। जो आज की नारी की स्वतंत्र मनःस्थिति का सच्चा दस्तावेज है :-
2ण यह तीनों कवयित्रियाँ क्रमशः अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाती दिखाई दे रही हैं। सबसे आगे सुमन राजे हैं-
तुम पुकारो तो सही
लौट आएगी वह नदी
जो चट्टानों के भीतर ही भीतर बहती है
तुम्हारे साथ-साथ आई है।
सुमन राजे के पीछे-पीछे कीर्ति चौधरी कहती हैं-
जरा उठो हौसला करो ना
थोड़ा हाथ-पैर चलाओ
इन्हीं पैरों की चाप से निर्झर फूटेंगे
इन्हीं हाथों से तो उगेगा सोना
3ण विचारों की हद तक अपनी अभिव्यक्ति में यह कवयित्रियाँए घर की चार- दीवारी को लाँघकर आत्मनिर्भर होकर अपनी-अपनी स्वतंत्र जमीन खोजती हैं। जो स्त्रीवादी साहित्य का प्रमाण है।
4ण यह तीनों कवयित्रियाँ अपने-अपने उत्तर स्वयं ही तलाशती हैं। अपनी मानसिक चेतना और आत्मिक उर्जा के बल पर।
मैं ढोल गवार शूद्र-
पशु के साथ जुड़ी
एक मामुली चीज नहीं हूँए
तुम्हें क्याए

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

रहने दो मेरा इमली के पत्ते भर सुख
और केले के पातभर दुःख
रहने दो मेरी चलनी में सागर
रहने तो मेरी बालू में गागर

.सुमनराजे

5ण भाषा की हद तक तीनों की अपनी जमीन भिन्न है। किन्तु विचारों की हद तक यह कवयित्रियाँ एक ही जमीन पर उतरती हैं।

6ण स्त्री - वादी साहित्य की अभिव्यक्ति केवल महिला साहित्यकारों तक ही सीमित नहीं है बल्कि पुरुष साहित्यकारों ने भी कलम चलायी है। गिरिजा कुमार माथुर की साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त कृति श्मैं वक्त के सामने हूँश की रचना है ष घास वालियों का वसंतश में आदिवासी नारी आर्थिक विपन्नता की दुःख पूर्ण स्थिति में भी जीवन का वसंत घास चुराने बेचने और रोटी की समस्या हल करने में देखती है।

रूखे रूखे बाल
मटमैली धोतियाँ
पहने दो औरतें
कंधों पर मैली चादर की
एक लंबी झोली हैए
खोजती खोदती हैं
दूब घास
बेचेंगी चारे को
शाम तभी उनके लिए लायेगी
यही घास
रात की रोटी के लिए
आटा बन जायेगी

दिनकरए सोनवलकरए जगदीश गुप्तए नागार्जुनए रघुवीर सहाय तथा धूमिल आदि (समाज में नारी की यथार्थ स्थिति को स्पष्ट करना चाहा) नारीवादी साहित्य के समर्थक हैं।

अंत में मेरे अपने अवलोकन के आधार पर एक सवाल छोड़ जाना चाहती हूँ कि श्स्त्रीवादी साहित्य नाम की कोई चीज है ही नहींश्ए ऐसा कहने वाले पुरुष समीक्षक ही अधिक संख्या में पाये गये हैं। जिस प्रकार 33ः प्रतिशत संविधान में आरक्षण स्त्री को देने में हिचकिचाहट हो रही है। उसी प्रकार स्त्रीवादी साहित्य को श्स्त्रीवादीश कहने से पुरुष समीक्षक क्यों पीछे हट रहा है ष क्या इसलिए पुरुषों द्वारा होने वाले अन्यायों से उभरकर वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व बना रही है ष या अपनी अभिव्यक्ति में पुरुष प्रधान संस्कृति को ललकार रही है ष या पुरुष द्वारा होने वाले अन्याय तथा अत्याचार के कुछ बुनियादी सवाल वह घर की चारदीवारी से बाहर लाकर पुरुष का अपमान कर रही है। अंत में यह कहते हुए बात समाप्त करती हूँ श्विचार से बड़ा व्यभिचार कुछ भी नहीं है।श जो सोचते हैं उनके लिए कुछ भी पवित्र नहीं है। यह भी उतना ही सच है कि रोगोपचार में मीठी कड़वी दवा नहीं देखी जाती। स्त्रीवादी साहित्य सही रूप में बाहर खींच निकालने के लिए कुछ पुरुष समीक्षकों को अनस्थेशिया देना ही पड़ेगा।

References

1. Beauvoir, S. de. (1949). The Second Sex. Paris: Gallimard.
2. Agyeya (Ed.). (1951). दूसरा सप्तक. New Delhi: Bharatiya Jnanpith.
3. Agyeya (Ed.). (1959). तीसरा सप्तक. New Delhi: Bharatiya Jnanpith.
4. Agyeya (Ed.). (1979). चौथा सप्तक. New Delhi: Bharatiya Jnanpith.
5. Mathur, G. K. (1971). मैं वक्त के सामने हूँ. New Delhi: Sahitya Akademi.
6. Jadhav, T., & Shirpurkar, M. (Year). मानवी हक्क. Pune: Unique Academy.
7. Patil, V. B. (Year). महाराष्ट्र शासन. Pune: Prashant Publication.